दादी जी का जीवन हम सभी के लिए एक झांकी

पूर्ण विश्वास के साथ कार्य सौंपने की ताकत, व्यवस्था की ज़िम्मेवारी, बातचीत करने का सलीका, अपनापन देने का हुनर, सेवा को अहमियत, योग्य बनाकर योग्यता को सेवा में प्रयोग करने वाली, सभी को सजाने और संवारने का पूरा प्रबंधन, हम सभी को उमंग-उत्साह दिलाने वाली हम सबकी आदरणीय प्यारी दादी जी ही थीं।

दादी जी के मधुर मुस्कान व प्यार कभी भूलता नहीं

दादी जी के अंग-संग रहने के कारण कोई भी योग्यता पैदा करने में मुझे कोई खास मेहनत नहीं करनी पड़ी। जैसे पारस के संग रहकर लोहा भी पारस बन जाता है, ऐसे दादी जी के संग रहकर मैं भी योग्य बन गई। सुबह से सायंकाल तक की व्यस्त दिनचर्या में सैकड़ों बार उनके सम्मुख जाना होता, उनकी प्यार भरी दृष्टि पड़ती और मेरे अंदर उमंग-उत्साह की लहरें हिलोरे मारने लगतीं। उनके सामीप्य में थकान किसे कहते हैं, मैंने नहीं जाना। मुझे महसूस होता रहा कि ये नज़रें दादी जी की नहीं, स्वयं भगवान की हैं, जो मुझे निहाल कर रही हैं। उनके स्पर्श मात्र से दिव्य शक्ति का मुझमें संचार होता था। ओम् शांति भवन, ज्ञानसरोवर, शांतिवन आदि सभी यज्ञ के बड़े-बड़े भवनों को सजाने-संवारने का पूरा प्रबंधन दादी ने मुझे सिखाया। दादी खरीददारी की चीज़ें खुद बैठकर लिखवाती थीं। दादी की हर आज्ञा को साकार करने में मैं दिल से जुट जाती थी, मुझे बहुत खुशी मिलती थी। - *राजयोगिनी ब्र.कु. मुन्नी दीदी, संयुक्त मुख्य प्रशासिका, ब्रह्माकुमारीज़*

दादी में कर्तापन का भान नहीं था

दादीजी की सबसे बड़ी विशेषता थी उनमें मैं-पन का सम्पूर्ण अभाव। हमने कभी भी उन्हें 'मैं' शब्द का उपयोग करते नहीं देखा। दादी के मुख्य प्रशासिका बनने से पहले भी मुम्बई में मुझे दादी के साथ रहने का अवसर मिला। उन्हें अपना विचार प्रकट करना भी होता था तो वे कहती थीं कि दादी का यह विचार है, दादी ऐसा करना चाहती है। हम सभी सामान्य रूप से यह कहते हैं कि मेरा यह विचार, मैं यह करना चाहती हूँ। परंतु दादी ने कभी 'मैं' या 'मेरा' शब्द उपयोग नहीं किया। खुद का पार्ट भी वे साक्षी होकर बजाती थीं। उन्हें भले बैठकर अधिक समय योग करने का समय नहीं मिलता था लेकिन उनका हर कर्म ही योगयुक्त था। कर्म में ही बाबा की याद समाई होने के कारण उनके हर कर्म महान व श्रेष्ठ थे। उनमें कर्तापन का भान बिल्कुल नहीं था। वे सदा स्वयं को निमित्त व बाबा को करनकरावनहार समझती थीं। इस धारणा के कारण वे हर कर्म करते सहज न्यारा रहती थीं। वे सदा सभी को साथ लेकर चलती थीं इसलिए सभी उनसे प्रसन्न व संतुष्ट रहते थे। - *राजयोगिनी ब्र.कु. संतोष दीदी, संयुक्त मुख्य प्रशासिका, ब्रह्माकुमारीज़*

दादी का दिल बहुत विशाल था

दादीजी पूर्ण विश्वास के साथ मुझे कोई कार्य सौंपती थीं। जब मैं बिल्कुल नयी थी और किस कार्य को कैसे करना है नहीं आता था तो दादी कहती कि बाबा और दादी को आपमें विश्वास है कि आप इस कार्य को कर लेंगी। दादी का विश्वास मुझे सदैव प्रेरणा देता रहा। सभी सेवाओं के साथ-साथ मुझे विदेशी भाई-बहनों के आवास-निवास की व्यवस्था की ज़िम्मेवारी भी सौंपी गई। दादी को सभी आत्माओं को मधुबन में बुलाना बहुत पसंद था, परंतु रहने का स्थान कम होने से पूरा भर जाता था और कई विदेशी भाई-बहनों को स्थान नहीं मिल पाता था। एक बार मैंने दादी से पूछा कि दादी हमारे पास अभी ज़्यादा स्थान की सुविधा नहीं है तो और अधिक आत्माओं को क्यों बुलाना? तो दादी ने कहा कि ये बाबा का घर है, यदि दिल बड़ा हो तो सब कुछ संभव है। थोड़ा एडजस्ट करने और दुबारा व्यवस्था करने पर सब आसानी से हो जाता था। कई बार दादी स्वयं हॉल तथा ठहरने की व्यवस्था देखने जाती थीं। - *राजयोगिनी ब्र.कु. शशिप्रभा दीदी, संयुक्त मुख्य प्रशासिका, ब्रह्माकुमारीज़*

दादी की सोच विश्व कल्याण के प्रति हमेशा रहती

जब विदेश में सेवा शुरु हुई, तो लंडन तथा हॉन्गकॉन्ग में सेवाकेंद्र था। फिर गयाना, कैरेबियन की तरफ निमंत्रण मिला। मैं वहां गयाना में गई, तो दादी जी और रमेश भाई यात्रा पर निकले तो दादी जी प्लेन से अमेरिका से क्रॉस कर रही थीं तो उनकी नज़र नीचे गई, तो उन्होंने कहा कि ये तो बहुत बड़ा देश है, यहां सेवाकेंद्र क्यों नहीं है? यहां बाबा की सेवा क्यों नहीं होती? तो उन्होंने मेरे से बात की और कहा कि देखो, आप यहां बैठी हैं, इतना बड़ा देश है, आपको तो वहां होना चाहिए, आपको तो दिल्ली का अनुभव है। कुछ करो। तो उन दिनों में हमारे अंकल स्टीव थे गयाना में तो सारे परिवार से, लौकिक-अलौकिक परिवार से उन्होंने बात की और इस तरह से न्यूयॉर्क में मेरा आना हुआ। यहां एक बहुत छोटा सा फ्लैट लिया और वहां से सेवायें शुरु की।

सबसे बड़ी बात थी कि यूएन में ही एक ऑफिस होने से अंतर्राष्ट्रीय रूप से इसका बहुत प्रभाव था, क्योंकि उस तरह की सामाजिक जो बातें होती हैं वो यूएन डील करता है, तो केवल धार्मिक संस्था के रूप में ही नहीं, बल्कि समाज के विभिन्न वर्गों हेतु किये जाने वाले मूल्य आधारित कार्यों के तहत इस संस्था को मान्यता मिली। तब दादी ने कहा कि यहां बाबा का झण्डा लहराना चाहिए। - *राजयोगिनी ब्र.कु. मोहिनी दीदी, अतिरिक्त मुख्य प्रशासिका, ब्रह्माकुमारीज़*

अक्षम्य को भी दादी करती क्षमा

दादीजी का दूसरों की गलतियों को क्षमा करने का स्वभाव दिल को छू जाता था। दादी कहती थीं कि बाबा, कौड़ी से हीरा, पतित से पावन व तमोप्रधान से सतोप्रधान बनाने आये हैं। हर आत्मा जो ईश्वरीय ज्ञान-योग का अभ्यास करती है, पुरुषार्थी है, सम्पूर्ण नहीं है। उन्होंने सदा सभी पर रहम किया और दिल से गलतियों को क्षमा कर दूसरों को भी बीती बातों को याद न करने की शिक्षा देती थीं। अपने हृदय को स्वच्छ, निर्मल, शक्तिशाली बनाकर फिर से पुरूषार्थ में लग जाने की प्रेरणा देती थीं। दादी का स्लोगन रहा, क्षमा करो और भूल जाओ। सभी को सम्मान देकर वे स्वयं सम्माननीय बन गईं। उनका व्यक्तित्व दिव्यता व अलौकिकता से सम्पन्न था। - *राजयोगिनी ब्र.कु. आशा दीदी, निदेशिका ओआरसी, गुरुग्राम*

दादी में शिवबाबा की छवि दिखाई देती थी

ओम् निवास में जो भी छोटी-छोटी कुमारियां थी, उनकी संभाल करने की ज़िम्मेदारी बाबा ने दादी जी को ही दी थी। बाबा अपनी ज़िम्मेवारियां दादी को ही सौंप दिया करते थे, साथ-साथ उनको सिखाते जाते थे। कारोबार कैसे चलाना है, किस प्रकार बातचीत करनी है, किस प्रकार संभालना है वो सब कला दादी में बाबा से आ गई। बाबा समान ही दादी के अंदर फीलिंग थी कि यह मेरा ही परिवार है, ये मेरे ही बच्चे हैं। बाबा का परिवार अर्थात् मेरा परिवार। दादी में सबके प्रति अपनापन होने के कारण सभी को भी दादी के प्रति अपनापन आता था। सब समझते थे कि दादी हमारी हैं। दादी को देखने का, उनके साथ रहने का, उनके साथ सेवा में सहयोगी बनने का पार्ट हमारा भी रहा। बाबा के साथ मम्मा भी रहती थीं लेकिन बाबा के साथ सेवा में बाहर जाना ज़्यादा दादी का ही होता था। - *राजयोगिनी दादी रतनमोहिनी, मुख्य प्रशासिका, ब्रह्माकुमारीज़*

दादी का निर्णय बाबा की तरह परफेक्ट और एक्यूरेट होता

मां की तरह दादी ने इतनी प्रेम की पालना दी। भारत ही क्या सारे विश्व को, सारे विदेश को भी। जिस समय विदेश की सेवाएं शुरू हुई, उस समय दादी का शुरू से ही हर प्रकार से न सिर्फ सहयोग रहा अथवा योगदान रहा परंतु दादी लीडर के रूप में एक विशाल बुद्धि होने कारण, दूरांदेशी बुद्धि होने कारण दादी समझ सकती थी कि विदेश की सेवा के लिए किस प्रकार से पालना देनी होती। तो जब हम दादी के पास आते थे दादी से राय-सलाह कोई भी बात करते थे, दादी का बिल्कुल बाबा की याद में एक सेकण्ड रूकना और फिर दादी हमें जो राय-सलाह देती थीं वह बहुत ही योगयुक्त, युक्तियुक्त, राजयुक्त कहें, हमें एक्यूरेट गाइडेंस मिल जाती थी। तो उस आधार पर ना सिर्फ एक देश परंतु जैसे आपने सुना सारे विश्वभर में बाबा का कार्य चल रहा है। तो हम कहेंगे कि दादी की लिडरशिप के हिसाब से दादी ने इतनी प्रेरणादायक बातें बताई जिससे आज विश्व की सेवाएं भी चल रही हैं। - *राजयोगिनी ब्र.कु. जयन्ती दीदी, अतिरिक्त मुख्य प्रशासिका, ब्रह्माकुमारीज़*

हमने दादी को धरा पर फरिश्ते समान देखा

दादी जी की साधारण से साधारण बात में भी बड़ी ऊँची भावनाएं समाई होती थीं। दादी अक्सर सेवा-अर्थ देहली में आती थीं और पाण्डव भवन में रूकती थीं। एक बार जैसे ही हॉल में कार्यक्रम पूरा हुआ दादी बरामदे में आकर बैठीं, सभी वापस जा रहे थे। तभी एक परिवार की 5 वर्ष की बच्ची और 3 वर्ष का उसका भाई, बरामदे में आने की कोशिश कर रहे थे। वहाँ दो स्टैप थे चढ़ने के, छोटा बच्चा चढ़ नहीं पा रहा था। बच्ची ने अपने भाई को उठा लिया, पर ठीक से उठा नहीं पा रही थी। जैसे-तैसे उसे छाती से लगाकर स्टैप चढ़कर बरामदे में आ गयी कि कहीं मेरा भाई गिर न जाये। दादी ये सब बड़े ध्यान से देख रही थीं। मैं दादी के पास ही खड़ी थीं। दादी ने कहा पुष्पा, देखा तुमने, कितना प्यार है इसको अपने भाई से। यह है प्यार। जैसे दादी के उस कहने में भी गहरी भावनाएं थीं और बड़े राज़ से दादी यह सब कह रही थीं। हमने अनुभव किया कि दादी की साधारण बात में भी बड़ी ऊँची भावनाएं, बेहद दृष्टिकोण, विशाल हृदय और शुभ कामनाएं समाई हुई होती थीं। दादी को मुरली सुनाते हुए मैंने कई बार सफेद-सफेद चमकते फरिश्ते के स्वरूप में देखा। मैं कईयों को सुनाती भी थी कि आज दादी धरती पर फरिश्ता स्वरूप थीं। - *राजयोगिनी ब्र.कु. पुष्पा दीदी, अध्यक्षा न्यायविद प्रभाग, ब्रह्माकुमारीज़*